एम.एच.डी.

एम. ए. हिंदी कार्यक्रम

एम.ए. हिन्दी प्रथम वर्ष के सत्रीय कार्य
(जुलाई 2016 और जनवरी 2017 सत्रों के लिए)

एम.एच.डी.-2 : आधुनिक हिन्दी काव्य
एम.एच.डी.-3 : उपन्यास एवं कहानी
एम.एच.डी.-4 : नाटक और अन्य गद्य विधाएँ
एम.एच.डी.-6 : हिन्दी भाषा और साहित्य का इतिहास

मानविकी विद्यापीठ
इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय
मैदानगढ़ी, नई दिल्ली–110 068

सत्रीय कार्य 2016-17

पाठ्यक्रम कोड : एम.एच.डी.

प्रिय छात्र/छात्राओ,

यह एम.ए. हिंदी प्रथम वर्ष के सत्रीय कार्यों की पुस्तिका है। इसमें एम.एच.डी.-02, 03, 04 और 06 पाठ्यक्रमों के सत्रीय कार्य हैं। ये 8–8 क्रेडिट के पाठ्यक्रम हैं और आपको हर पाठ्यक्रम में एक-एक सत्रीय कार्य करना होगा। प्रत्येक सत्रीय कार्य 100 अंकों का है। प्रत्येक सत्रीय कार्य में पूरे पाठ्यक्रम से प्रश्न पूछे जाएंगे।

एम.ए. कार्यक्रम में अध्ययन के लिए आपको कई खंडों में पाठ्य सामग्री भेजी गई है। साथ ही पाठ्यक्रमों में अतिरिक्त अध्ययन के लिए 'विवेचना' नाम से आलोचनात्मक लेखों के संग्रह भेजे गए हैं। पाठ्यक्रम 2, 3, तथा 4 में 'विविधा' नाम से मूल साहित्यिक कृतियों का संकलन किया गया है। पाठ्यक्रमों में शामिल नाटक और उपन्यासों को प्राप्त करने की व्यवस्था आपको स्वयं करनी होगी। आपसे अपेक्षा की जाती है कि सत्रीय कार्य करने से पहले इन सभी कृतियों को पढ़ लें।

एम.ए. स्तर पर परीक्षा में पूछे जाने वाले सवाल केवल पाठ्य पुस्तकों तक सीमित नहीं होते। अतः छात्रों से यह भी अपेक्षा की जाती है कि वे उपलब्ध कराई गई सामग्री के अतिरिक्त पुस्तकालयों से अन्य पुस्तकों और पत्रिकाओं का भी अध्ययन करें, जिससे ज्ञान में वृद्धि हो।

उद्देश्य : सत्रीय कार्य का उद्देश्य यह जाँचना है कि आपने पाठ्यक्रम से संबंधित सामग्री को कितना पढ़ा-समझा है और उसका विवेचन-विश्लेषण और मूल्यांकन करने की क्षमता कितनी अर्जित की है। सत्रीय कार्यों का उद्देश्य यह भी है कि पाठ्य सामग्री के अध्ययन के पश्चात् आप उसके संबंध में स्वयं अपना दृष्टिकोण विकसित कर सकें और उन्हें अपने शब्दों में लिख सकें। इसका तात्पर्य यह है कि विश्वविद्यालय द्वारा उपलब्ध कराई गई सामग्री को आप पुनर्प्रस्तुत न करें। बल्कि पूछे गए प्रश्नों का उत्तर सोच-विचारकर अपने शब्दों में लिखें। आपके उत्तर में आपको अध्ययन, आलोचनात्मक दृष्टि रचनाओं के बारे में आपकी अपनी समझ और भाषा पर आपका अधिकार व्यक्त होना चाहिए। आपके सत्रीय कार्य का मूल्यांकन करते हुए परीक्षक इन सभी बातों को ध्यान में रखेंगे।

निर्देश : सत्रीय कार्य आरंभ करने से पूर्व निम्नलिखित बातों को ध्यान से पढ़िए :

1. एम.ए. हिंदी के पाठ्यक्रमों के लिए कार्यक्रम दर्शिका में दिए हुए निर्देशों का सावधानीपूर्वक अध्ययन कीजिए।
2. अपनी उत्तर-पुस्तिका के पहले पृष्ठ के दाएँ सिरे पर अपना अनुक्रमांक, नाम, पूरा पता और दिनांक लिखिए।
3. अपनी उत्तर-पुस्तिकाओं की बाईं ओर पाठ्यक्रम का शीर्षक, सत्रीय कार्य कोड और उस अध्ययन केंद्र का नाम/कोड लिखिए, जिससे आप संबद्ध हैं।

उत्तर पुस्तिका का प्रथम पृष्ठ निम्न प्रकार से शुरू होगा :

	अनुक्रमांक :..
	नाम : ....
	पता : ....
पाठ्यक्रम शीर्षक :..	....
सत्रीय कार्य कोड :..	....
अध्ययन केंद्र का नाम/कोड :	दिनांकः ....

4. उत्तर के लिए केवल फुलस्केप के आकार के कागज का इस्तेमाल करें और उन कागजों को अच्छी तरह से बाँध लें।
5. प्रत्येक उत्तर से पहले प्रश्न संख्या अवश्य लिखें और अपनी लिखावट में उत्तर दें।
6 सत्रीय कार्य की उत्तर-पुस्तिका जाँच के लिए अपने अध्ययन केंद्र के समन्वयक (coordinator) के पास जमा कराएं। जुलाई, **2016 सत्र** में प्रवेश लेने वाले विद्यार्थी अपना सत्रीय कार्य **31 मार्च 2017** तक और **जनवरी, 2017 सत्र** में प्रवेश लेने वाले विद्यार्थी अपना सत्रीय कार्य **30 सितम्बर, 2017** तक अवश्य जमा करा दें।

प्रश्नों के उत्तर देने से पूर्व निम्नलिखित निर्देशों का सावधानीपूर्वक अध्ययन करें:

1. प्रश्नों में जो पूछा गया है, उसको अच्छी तरह समझ कर उत्तर लिखें। जो नहीं पूछा गया है, उसे न लिखें। जितना पूछा गया है, उतना ही लिखें।
2. व्याख्या से संबंधित काव्यांशों में, संदर्भ, प्रसंग, व्याख्या और भाषा शैली या अन्य किसी विशेष बात का उल्लेख करें। इन सभी पहलुओं के लिए अंक निर्धारित होते हैं।
3. आपका उत्तर सुसंगत, सुबोधगम्य और स्पष्ट हो।
4. वाक्यों और अनुच्छेदों के बीच क्रमबद्धता हो।
5. आपके लेखन में भाषागत त्रुटियाँ न हों, विशेष रूप से वर्तनी और व्याकरण संबंधी गलतियों से बचें।
6. उत्तर साफ और सुंदर अक्षरों में लिखें तथा जिन बातों पर बल देना चाहते हैं, उन्हें रेखांकित कर दें।
7. अपने पास सत्रीय कार्य के उत्तर की प्रति अवश्य रखें।

शुभकामनाओं सहित!

नोटः याद रखें कि परीक्षा में बैठने से पूर्व सत्रीय कार्य जमा कराना अनिवार्य है। अन्यथा आपको परीक्षा में बैठने की अनुमति नहीं दी जाएगी।

एम.एच.डी–2
आधुनिक हिंदी-काव्य

एम.ए. हिंदी से संबंधित यह अनिवार्य पाठ्यक्रम है। इसमें आपने आधुनिक हिन्दी काव्य के कुल चौदह कवियों की कविताओं का अध्ययन किया है। इन कवियों की कविताएँ 'आधुनिक काव्य विविधा' में दी गई है। इन कवियों के काव्य से संबंधित आपको विभिन्न इकाइयाँ भी अध्ययन के लिए दी गई है। इनके अतिरिक्त आपको 'आधुनिक काव्य विवेचना' नामक पुस्तक भी अध्ययन के लिए दी गई है जिनमें पाठ्यक्रम में शामिल कवियों पर कई आलोचनात्मक लेख भी दिये गये है। आशा है, आपने इन सभी का अध्ययन कर लिया होगा। इनके अध्ययन से आपको सत्रीय कार्य करने में मदद मिलेगी।

एम.ए. के सभी पाठ्यक्रमों में विद्यार्थी को एक-एक सत्रीय कार्य करने होंगे। इस सत्रीय कार्य में पूरे पाठ्यक्रम में से प्रश्न पूछे जाएँगे।

सत्रीय कार्य और संत्रात परीक्षा में प्रश्नपत्र का ढाँचा कमोबेश एक-सा होगा। इसलिए सत्रीय कार्य को गंभीरता से लें। इनमें आपसे तीन तरह के प्रश्न पूछे जाएंगे।

- आपको पाठ्यक्रम में शामिल रचनाओं में से कुछ काव्यांशों की व्याख्या करनी होगी। यह प्रश्न अनिवार्य होगा जिन पर लगभग 35 से 40 अंक के प्रश्न पूछे जाएंगे।
- इसमें कुछ निबंधात्मक प्रश्न होंगे जिसमें पाठ्यक्रम में शामिल कवियों और उनकी रचनाओं पर आलोचनात्मक प्रश्न पूछे जाएँगे। आलोचनात्मक प्रश्न कवि की विशेषता और उनके योगदान तथा उसके काव्य की अंतर्वस्तु, प्रतिपाद्य, भाषा, शिल्प, महत्त्व और अन्य कवियों और रचनाओं से तुलना से संबंधित हो सकते हैं।
- आपसे विभिन्न विषयों पर टिप्पणियाँ करने के लिए भी दी जाएँगी, जो विवरणात्मक और आलोचनात्मक दोनों तरह की हो सकती हैं।
- निबंधात्मक और टिप्पणीपरक प्रश्नों के लिए लगभग 60 अंक निर्धारित होंगे। अंकों का यही विभाजन कमोबेश सत्रांत परीक्षा पर भी लागू होगा।

सत्रीय कार्य
(सभी खंडों पर आधारित)

पाठ्यक्रम कोड : एम.एच.डी.–2
सत्रीय कार्य कोड : एम.एच.डी–2/टी.एम.ए/2016–17
कुल अंक : 100

1. **निम्नलिखित प्रत्येक काव्यांश की लगभग 200 शब्दों में सप्रसंग व्याख्या कीजिए : 12x3=36**

क) विजन–वन–वल्लरी पर
सोती थी सुहाग–भरी – स्नेह–स्वप्न–मग्न–
अमल–कोमल–तनु तरुणी – जुही की कली,
दृग बन्द किए, शिथिल – पत्रांक में,
वासन्ती निशा थी;
विरह–विधुर–प्रिया–संग छोड़
किसी दूर देश में था पवन
जिसे कहते हैं मलयानिल।

ख) यह दीप अकेला स्नेह भरा
है गर्व भरा मदमाता, पर इस को भी पंक्ति को दे दो।

यह जन है : गाता गीत जिन्हें फिर और कौन गायेगा?
पनडुबा : ये मोती सच्चे फिर कौन कृती लायेगा?

यह समिधा : ऐसी आग हठीला बिरला सुलगायेगा।
यह अद्वितीय : यह मेरा : यह मैं स्वयं विसर्जित :
यह दीप, अकेला, स्नेह भरा
है गर्व भरा मदमाता, पर इस को भी पंक्ति को दे दो।

ग) मैं हूँ इस नदिया का बूढ़ा पुल

मुझ में से हहराता
गुज़र गया कितना जल !
लेकिन मैं माथे पर यात्राएँ बोहे इस
रेती में गड़ा रहा।
मुझ पर से घर–घर–घर
गुज़र गये कितने रथ।
लेकिन मैं पानी के पहियों की
ध्वनि सुनता खड़ा रहा।

2. निम्नलिखित प्रत्येक प्रश्न का उत्तर लगभग 800 शब्दों में दीजिए : **16×3=48**

(क) मैथिलीशरण गुप्त की काव्य भाषा पर विचार कीजिए।

(ख) जयशंकर प्रसाद के काव्य में अभिव्यक्त राष्ट्रीय चेतना पर प्रकाश डालिए।

(ग) धूमिल की कविताओं की काव्यगत विशेषताएँ बताइए।

3. निम्नलिखित पर टिप्पणियां लिखिए : **8×2=16**

(क) नागार्जुन का काव्य शिल्प

(ख) रघुवीर सहाय के काव्य में राजनीति

एम.एच.डी.–3
उपन्यास एवं कहानी

एम.ए. हिंदी से संबंधित यह अनिवार्य पाठ्यक्रम है। इसमें आपने उपन्यासों और कहानियों का अध्ययन किया है। पाठ्यक्रम में कुल पाँच उपन्यास और 14 कहानियाँ हैं जिन पर कुल 27 इकाइयों का आपने अध्ययन किया है। इनके अतिरिक्त 'हिन्दी कहानी विवेचना' नामक पुस्तक में आपको पाठ्यक्रम में सम्मिलित उपन्यासों और कहानियों पर अतिरिक्त सामग्री दी गयी है। आपको इस पाठ्यक्रम की संपूर्ण सामग्री का गंभीरता से अध्ययन करना होगा। सत्रीय कार्य और सत्रांत परीक्षापत्र का ढाँचा कमोबेश एक-सा होगा। इस पाठ्यक्रम से संबंधित एक ही सत्रीय कार्य करना होगा। इस सत्रीय कार्य में आपको दो तरह के प्रश्न करने होंगे। निबंधात्मक प्रश्न और टिप्पणीपरक प्रश्न। प्रश्नों का उत्तर पाठ्यक्रम का अध्ययन कर, सोच-विचारकर अपने शब्दों में लिखें। प्रश्न को समझकर उत्तर लिखें। पाठ्य सामग्री से नकल न करें।

सत्रीय कार्य
(सभी खंडों पर आधारित)

पाठ्यक्रम कोड : एम.एच.डी.–3
सत्रीय कार्य कोड : एम.एच.डी.–3/टी.एम.ए./2016–2017
कुल अंक : 100

सभी प्रश्नों के उत्तर दीजिए। 15×4=60

1. राष्ट्रीय आंदोलन के संदर्भ में 'गोदान' का मूल्यांकन कीजिए।
2. 'धरती धन न अपना' में दलित जीवन की प्रामाणिक अभिव्यक्ति हुई है – इस कथन पर विचार कीजिए।
3. 'मैला आँचल' के संरचना शिल्प की मुख्य विशेषताओं पर प्रकाश डालिए।
4. 'बाणभट्ट की आत्मकथा' में अभिव्यक्त प्रेम की परिकल्पना पर अपने विचार व्यक्त कीजिए।
5. निम्नलिखित पर टिप्पणियाँ लिखिए : 10×4=40

   (क) 'ठाकुर का कुँआ' में गंगी का चरित्र

   (ख) यशपाल की कहानियों में चित्रित मध्यवर्ग

   (ग) साठोत्तरी कहानी का भाव-बोध

   (घ) 'चीफ की दावत' का उद्देश्य

एम.एच.डी.–4
नाटक और अन्य गद्य विधाएँ

एम.ए. हिंदी से संबंधित यह अनिवार्य पाठ्यक्रम है। इसमें आपने नाटकों और अन्य गद्य विधाओं का अध्ययन किया है। चार नाटक और चौदह गद्य रचनाओं पर कुल 26 इकाइयाँ हैं। इनके अतिरिक्त आपको 'हिंदी गद्य विवेचना' के अंतर्गत कई आलोचनात्मक लेख भी दिए गए हैं। आशा है, आपने इन सभी का अध्ययन कर लिया होगा। इनके अध्ययन से आपको सत्रीय कार्य करने में मदद मिलेगी।

एम.ए. के सभी पाठ्यक्रमों में विद्यार्थी को एक-एक सत्रीय कार्य करने होंगे। इस सत्रीय कार्य में पूरे पाठ्यक्रम में से प्रश्न पूछे जाएँगे।

सत्रीय कार्य और संत्रात परीक्षा में प्रश्नपत्र का ढाँचा कमोबेश एक-सा होगा। इसलिए सत्रीय कार्य को गंभीरता से लें। इनमें आपसे तीन तरह के प्रश्न पूछे जाएंगे।

- आपको पाठ्यक्रम में शामिल रचनाओं में से कुछ गद्यांशों की व्याख्या करनी होगी। यह प्रश्न अनिवार्य होगा जिन पर लगभग 35 से 40 अंक के प्रश्न पूछे जाएंगे।

- इसमें कुछ निबंधात्मक प्रश्न होंगे जिसमें पाठ्यक्रम में शामिल रचनाओं पर आलोचनात्मक प्रश्न पूछे जाएँगे। आलोचनात्मक प्रश्न रचना की अंतर्वस्तु, प्रतिपाद्य, चरित्र-चित्रण, भाषा, शिल्प, महत्त्व और अन्य रचनाओं से तुलना से संबंधित हो सकते हैं। नाटक से संबंधित सवालों में रंगमंच प्रस्तुति और अभिनेयता के बारे में भी सवाल होंगे।

- आपसे विभिन्न विषयों पर टिप्पणियाँ करने के लिए भी दी जाएँगी, जो विवरणात्मक और आलोचनात्मक दोनों तरह की हो सकती हैं।

- निबंधात्मक और टिप्पणीपरक प्रश्नों के लिए लगभग 60 अंक निर्धारित होंगे। अंकों का यही विभाजन सत्रांत परीक्षा पर भी लागू होगा।

सत्रीय कार्य
(पूरे पाठ्यक्रम के सभी खण्डों पर आधारित)

पाठ्यक्रम कोड : एमएचडी-4
सत्रीय कार्य कोड : एम.एच.डी.–4/टीएमए/2016–17
कुल अंक : 100

1. **निम्नलिखित अवतरणों की संदर्भ सहित व्याख्या कीजिए :** **10x4=40**

क) सभी धर्म, समय और देश की स्थिति के अनुसार विवृत्त होते रहे हैं और होंगे। हम लोगों को हठधर्मिता से उन आगंतुक क्रमिक पूर्णता प्राप्त करने वाले ज्ञानों से मुँह न फेरना चाहिए। हम लोग एक ही मूल धर्म की दो शाखाएँ हैं। आओ, हम दोनों विचार के फूलों से दुःख दग्ध मानवों का कठोर पथ कोमल करें।

ख) यह आत्महत्या होगी प्रतिध्वनित
इस पूरी संस्कृति में
दर्शन में, धर्म में, कलाओं में
शासन–व्यवस्था में
आत्मघात होगा बस अंतिम लक्ष्य मानव का।

ग) याज्ञवल्क्य ने जो बात धक्कामार ढंग से कह दी थी, वह अंतिम नहीं थी। वे 'आत्मनः' का अर्थ कुछ और बड़ा करना चाहते थे। व्यक्ति की 'आत्मा' केवल व्यक्ति तक सीमित नहीं है, वह व्यापक है। अपने में सब और सबमें आप– इस प्रकार की एक समष्टि-बुद्धि जब तक नहीं आती तब तक पूर्ण सुख का आनंद भी नहीं मिलता। अपने आपको दलित द्राक्षा की भांति निचोड़कर जब तक 'सर्व' के लिए निछावर नहीं कर दिया जाता तब तक 'स्वार्थ' खंड सत्य है, वह मोह को बढ़ावा देता है, तृष्णा को उत्पन्न करता है और मनुष्य को दयनीय कृपण बना देता है।

घ) ये नदियाँ इस देश की रक्तवाहिनी शिराओं के समान जीवनदायक रही हैं, इसी से इनके तट पर इस प्रकार के सम्मेलनों की स्थिति स्वाभाविक और अनिवार्य हो गई हो, तो आश्चर्य नहीं। आज इस संबंध में क्या और क्यों तो हम भूल चुके हैं, पर बिना जाने लीक पीटना धर्म बन गया है।

2 'अंधेर नगरी' में व्यक्त राजनीतिक और सामाजिक दृष्टिकोण का विवेचन करते हुए यह भी बताइए कि यह नाटक आज भी क्यों प्रासंगिक है? 10

3. स्त्री-पुरुष संबंधों में आ रहे बदलावों के संदर्भ में 'आधे-अधूरे' की कथावस्तु की समीक्षा कीजिए। 10

4. असंगत नाटक के रूप में 'तांबे के कीड़े' की विशेषताएँ बताइए। 10

5. 'कलम का सिपाही' के आधार पर प्रेमचंद के व्यक्तित्व का मूल्यांकन कीजिए। 10

6 निम्नलिखित विषयों पर टिप्पणियाँ लिखिए : 5X4=20

(क) 'धोखा' की भाषा

(ख) 'अदम्य जीवन' और रिपोर्ताज

(ग) 'किन्नर देश की ओर' का परिवेश

(घ) 'अंधायुग' का नाट्य शिल्प

एम.एच.डी.-6
हिंदी भाषा और साहित्य का इतिहास

एम.ए. हिंदी का यह अनिवार्य पाठ्यक्रम है। ''हिंदी भाषा और साहित्य का इतिहास'' में आपने आदिकाल से लेकर आधुनिक काल तक की विभिन्न काव्य प्रवृत्तियों, हिंदी गद्य साहित्य और भाषा के विकास का ऐतिहासिक दृष्टि से अध्ययन किया है।

सत्रीय कार्य का एक और उद्देश्य है – सत्रांत परीक्षा के लिए आपको तैयार करना। सत्रांत परीक्षा में जो सवाल आपसे पूछे जाएँगे उनका ढाँचा सत्रीय कार्य में पूछ गए सवालों जैसा ही होगा। इसीलिए सत्रीय कार्य को आप गंभीरता से लें। सत्रीय कार्य और सत्रांत परीक्षा में पूछे गए सवाल दो प्रकार के होंगे।

कुछ प्रश्न निबंधात्मक या विवेचनात्मक होंगे जो पाठ्यक्रम में शामिल हिंदी काव्य प्रवृत्तियों, गद्य साहित्य तथा हिंदी भाषा के ऐतिहासिक विकास से संबंधित हो सकते हैं।

दूसरे प्रकार के प्रश्नों में आपको विभिन्न विषयों पर विवरणात्मक/आलोचना टिप्पणियाँ लिखनी होंगी। निबंधात्मक प्रश्नों के लिए लगभग 60 प्रतिशत तथा टिप्पणीपरक प्रश्नों के लिए 40 प्रतिशत अंक निर्धारित किए गए हैं। सत्रांत परीक्षा में निबंधात्मक प्रश्न 60 से 80 प्रतिशत के हो सकते हैं।

सत्रीय कार्य
(खंड 1 से 8 पर आधारित)

पाठ्यक्रम कोड : एम.एच.डी-6
सत्रीय कार्य कोडः एम.एच.डी.-6/टीएमए/2016-2017
कुल अंक 100

निम्नलिखित सभी प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

1. आदिकालीन सिद्ध, नाथ और जैन साहित्य का संक्षिप्त परिचय दीजिए। 12
2. भक्तिकाव्य की सगुण काव्यधारा की प्रमुख प्रवृत्तियों का विवेचन कीजिए। 12
3. रीतिकालीन काव्य किन परिस्थितियों की देन है। उक्त परिस्थितियों का आलोचनात्मक परिचय दीजिए। 12
4. द्विवेदी युगीन साहित्य की प्रमुख विशेषताओं का उल्लेख कीजिए। 12
5. आधुनिक भारतीय आर्यभाषा के विकास का संक्षिप्त परिचय दीजिए। 12
6. निम्नलिखित पर टिप्पणियाँ लिखिए : 8X5=40
   क) देवनागरी लिपि
   ख) छायावाद
   ग) प्रेमाख्यानक काव्य परंपरा
   घ) हिन्दी आलोचना का उदय
   ङ) उर्दू साहित्य